४. जिन ढूँढ़ा

– *संत कबीर*

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागें अति दूर ।।

सिष को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय ।
गुरु को ऐसा चाहिए, सिष से कुछ नहिं लेय ।।

कबिरा संगत साधु की, ज्यों गंधी की बास ।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुबास ।।

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की स्वाँस से, लोह भसम ह्‌वै जाय ।।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़-गढ़ काढ़ै खोट ।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

जाको राखै साइयाँ, मारि न सक्कै कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

नैनों अंतर आव तूँ, नैन झाँपि तोहिं लेवँ ।
ना मैं देखौं और को, ना तोहि देखन देवँ ।।

लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ।।

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिं ।
ऐसे घट में पीव है, दुनिया जानै नाहिं ।।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठ ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।।

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोउ तू फूल ।
तोहि फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ।।

('बीजक' से)

०

परिचय

जन्म : लगभग १३९८, वाराणसी (उ.प्र.)

मृत्यु : लगभग १५१८, मगहर (उ.प्र.)

परिचय : भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के संतकवि कबीरदास मानवता एवं समता के प्रबल समर्थक थे । आपकी रचनाओं में धार्मिक आडंबर और सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह दिखाई देता है । मानवता ही आपका धर्म है । आपने किसी भी बाह्य आडंबर, कर्मकांड, की अपेक्षा पवित्र, नैतिक और सादगीभरे जीवन को अपनाया । आपकी भाषा सहज, सरल और सुबोध है । आपकी उलटबांसियाँ और रहस्यवाद प्रसिद्ध हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'साखी', 'सबद, 'रमैनी' इन तीनों का संग्रह 'बीजक' नामक ग्रंथ में किया गया है ।

पद्‌य संबंधी

यहाँ संत कबीरदास के नीति संबंधी दोहे दिए गए हैं । इन दोहों में संत कबीर ने गुरु के महत्त्व, गुरु-शिष्य संबंध, सद्‌व्यवहार, परोपकार, सहानुभूति आदि के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं । जीव, आत्मा-परमात्मा के बारे में भी आपके विचार महनीय चिंतन को प्रेरित करते हैं ।

शब्द संसार

सिष पुं.सं.(दे.) = शिष्य
गंधी पुं.सं.(दे.) = इत्र विक्रेता
सुबास पुं.सं.(दे.) = सुगंध
हाय अव्यय(सं.) = दुख सूचक शब्द
खोट स्त्री.सं.(हिं.) = दोष
बौरा पुं.सं.(दे.) = पागल, बावला

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

दोहों द्‌वारा प्राप्त सीख
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
गुरु		कुंभ
पंथी		छाया
फूल		सिष
कुम्हार		बौरा
		काँटा

(३) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. कस्तूरी की खोज करने वाला →
२. किनारे पर बैठा रहने वाला →
३. तीन नोकों वाला अस्त्र →
४. जो बलहीन है →

(४) दोहों में आए सुवचन :

१. ________
२. ________

(५) निम्नलिखित अर्थ के शब्द दोहों से ढूँढ़कर लिखिए :

१. पुत्र -------
२. इत्र विक्रेता -------
३. परमात्मा -------
४. खुद -------

(६) दोहों में प्रयुक्त निम्न शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए :

१. मृग
२. कुंभ
३. फल
४. बाल

(७) अपनी पसंद के किसी एक दोहे के भावार्थ से प्राप्त प्रेरणा लिखिए ।

उपयोजित लेखन

शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए :
थैली, जल, तस्वीर, अँगूठी

CHGXNE